इफिसियों
एक परिचय

इफिसियों के नाम पत्री को ''पूरी बाइबल में सबसे गम्भीर पुस्तक'' कहा गया है।[1] रोमियों जैसी बाइबल की अन्य पुस्तकों के छात्र इस पत्र के ऐसे बड़े अनुमान का अपवाद ले सकते हैं। यह तथ्य बना रहता है कि इफिसियों की पत्री परमेश्वर की सनातन मंशा से कम के साथ व्यवहार नहीं करती और यह इस दावे की हकदार है।

लेखक

भीतरी प्रमाण

इफिसियों के लेखक ने अपने आपको ''पौलुस, ... जो ... यीशु मसीह का प्रेरित है'' (1:1) और ''पौलुस, जो ... मसीह यीशु का बन्धुआ है'' (3:1) बताया। अभिवादन और पत्र के मुख्य भाग में अपने नाम का उल्लेख पौलुस के अन्य पत्रों में उसकी विशेष बात है।[2] पाठक को लेखक का *आत्म चित्रण* देते हुए इफिसियों की पुस्तक में प्रथम पुरुष में कई वाक्य पाए जाते थे:

> उसने व्यक्तिगत रूप में पाठकों के विश्वास और अन्य मसीही लोगों के प्रति उनके प्रेम को सुना है [1:15]; वह उनके लिए परमेश्वर को अपना व्यक्तिगत धन्यवाद देता है [1:16]; अपने आपको ''यीशु मसीह का बन्दी'' बताता है [3:1; 4:1]; ध्यान दिलाता है कि वह एक रहस्य को लिख रहा है, जो व्यक्तिगत रूप से उस पर प्रकट किया गया है [3:3-6]; सेवकाई के लिए अपनी स्वयं की ईश्वरीय नियुक्ति की ओर ध्यान दिलाता है [3:7]; पाठकों को उसके वर्तमान क्लेशों पर निराश न होने को कहता है [3:13]; उनके लिए विनम्र निवेदन का व्यवहार मान लेता है [3:14-19]; पाठकों की जीने के एक नये ढंग की वर्तमान आवश्यकता और अन्यजातियों की अज्ञानता और अनर्थ की पृष्ठभूमि के विरुद्ध सोच की पुष्टि करता है [4:17-19]; उस ''भेद'' की अपनी व्याख्या देता है [5:32]; जंज़ीरों में बंधे दूत के रूप में अपनी ओर से प्रार्थना की विनती करता है कि उसे बोलने का हियाव मिले [6:19]; और एक व्यक्तिगत सलाम के साथ समाप्त करता है [6:21, 22] लेखक-पाठक सम्बन्ध की इन पक्की गवाहियों से पौलुस के व्यक्तित्व को काफी समझा जा सकता है। वास्तव में यह उसकी अन्य पत्रियों से, जिनसे उसके बारे में पता चलता है, से मेल खाती प्रतीत होती है।[3]

धन्यवाद के साथ आरम्भ करते हुए, डॉक्ट्रिन यानी शिक्षा के भाग की ओर बढ़ते और व्यावहारिक प्रासंगिकताओं, ताड़नाओं और व्यक्तिगत मामलों से समाप्त करते हुए इफिसियों की

पुस्तक में पौलुस के अन्य पत्रों का ढंग इस्तेमाल किया गया है। भाषा भी पौलुस की ही है। ''लगभग हर वाक्य में वही लहज़ा है, जो पौलुस का और किसी जगह पर था।''[4] उदाहरण के लिए इफिसियों की 155 में से 78 आयतें थोड़े बहुत अन्तर के साथ कुलुस्सियों में पाई जाती हैं।[5] अधिकतर विद्वान मानते हैं कि कुलुस्सियों सचमुच में पौलुस की पत्री है और दोनों पत्रों की समानता इस तथ्य को वज़न देती है कि दोनों को ही पौलुस ने लिखा है।

बाहरी प्रमाण

चार्ल्स स्मिथ लुईस ने लिखा है, ''किसी भी पत्री में जिसे पौलुस की माना जाता है ... उनके आरम्भ और निरन्तर इस्तेमाल के प्रमाण की उतनी मज़बूत कड़ी नहीं है, जितनी हम इफिसियों की पत्री को मानते हैं।''[6] रूढ़िवादी मसीही और धर्म-विरोधी माने जाने वाले लोगों में दूसरी शताब्दी के मध्य यह पत्र पूरी तरह से व्यापक रूप में वितरित हो चुका प्रतीत होता है।

> चाहे ''लौदीकिया'' के लोगों के नाम से ही हो पर यह अति प्राचीन औपचारिक कैनन, जो मार्सिया का है, में शामिल था (लगभग ई. 140)। इस कारण यहां पर इसके पौलुस का होने पर कोई विवाद नहीं है, क्योंकि मार्सिया ने अपने अधिकार के रूप में केवल प्रेरित पौलुस को माना। लियोरेटोरियन कैनन (लगभग ई. 180) में यह पौलुस की पत्रियों में शामिल था। यह लातीनी और सीरियाई संस्करणों के लिए अति प्राचीन प्रमाण में पौलुस की पत्रियों का भाग है। ''क्लेमेंट ऑफ़ रोम पोलिकार्प, हरमेश और सम्भवतया डिडेक के लेखों में इसकी भाषा की स्मृतियां मिलती हैं।''[7]

आपत्तियां

इफिसियों के पत्र के पौलुस के लेखक होने पर 19वीं शताब्दी में संदेहवादी आलोचना के उठने तक कभी कोई विवाद नहीं था।[8] पौलुस के लेखक होने पर आपत्तियों को छह श्रेणियों में बांटा जा सकता है:[9]

(1) ''इफिसियों में विशेष रूप से ब्यालीस शब्द हैं, जो यह साबित करते हैं कि उसने इसे नहीं लिखा।'' परन्तु पौलुस अपने प्रसिद्ध पत्रों में विशेष शब्दों का इस्तेमाल करता था। यदि किसी ने दो पत्र लिखे हैं, जिनमें एक परमेश्वर के अस्तित्व के प्रमाण पर और दूसरा कलीसिया पर हो तो वह अलग-अलग शब्दावली का इस्तेमाल करेगा। पौलुस ने अपने पत्र अलग-अलग उद्देश्यों के लिए लिखे थे। इस कारण हम उससे अपने आपको अलग-अलग ढंगों का इस्तेमाल करने की उम्मीद करेंगे।

(2) '' 'भेद,' 'प्रबन्ध' और 'मोल लिए हुए' शब्दों का इस्तेमाल इस पत्र में एक नये अर्थ में किया गया है।'' यह आरोप संदेहास्पद है, परन्तु यदि सही भी हो तो पौलुस किसी शब्द का अर्थ एक ही प्रकार से करते रहने को बाध्य नहीं था।

(3) ''3:5 में 'उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं' का हवाला (तुलना करें 2:20; 4:11) संकेत देता है कि लेखक मसीही लोगों की दूसरी पीढ़ी का था, जो प्रेरितों का सम्मान करने आए थे।'' परन्तु पौलुस ने अपने आपको और इफिसुस के मसीही लोगों को ''पवित्र लोगों'' (3:8) या ''संतों'' में भी शामिल किया।

(4) ''इफिसियों में पत्र के आरम्भ में व्यक्तिगत अभिवादन की कमी है।'' यह केवल यह संकेत देता है कि यह पत्र अलग-अलग कलीसियाओं में वितरित करने के लिए बनाया गया था।

(5) '' 'कलीसिया' (देखें 5:23-32) के हवाले हैं न कि किसी स्थानीय मण्डली या मण्डलियों के।'' पौलुस के लिए यह असामान्य है, परन्तु पत्र के उद्देश्य से मेल खाता है।

(6) ''गैर पौलुसी पत्रों के साथ समानताएं मिलती हैं।'' यह इस बात को गलत साबित नहीं करता कि पौलुस ने इफिसियों की पत्री लिखी, क्योंकि एक जैसे विषयों पर लिखते हुए अलग-अलग लेखक ऐसी ही भाषा का इस्तेमाल कर सकते हैं।

संक्षेप में पौलुस ने कई बार अपना संदेश लिखने के लिए किसी ग्रंथी का इस्तेमाल किया हो सकता है,[10] पर इस बात का कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है कि नये नियम की जो पुस्तकें उसकी लिखी बताई जाती हैं उन्हें किसी और ने लिखा हो। मसीहियत के आरम्भिक वर्षों के कई कलमबद्ध दस्तावेज छद्म थे,[11] परन्तु इफिसियों के नाम पत्र की अपनी गवाही इस पत्री के पौलुस द्वारा लिखे होने की विश्वव्यापी स्वीकृति का समर्थन करती है।

आरम्भ का स्थान और समय

विद्वान आम तौर पर इस बात से सहमत होते हैं कि पौलुस को रोम में दो अवसरों पर कारावास हुआ था। प्रेरितों के काम की पुस्तक लगभग ई. 62 में पूरी हुई, जब पौलुस रोम में नज़रबंद था, जहां वह दो साल तक कैद में रहा (प्रेरितों 28:16-31)। प्रेरितों के काम की पुस्तक से स्पष्ट है कि पौलुस को काफ़ी आज़ादी थी और वह लिखने के साथ-साथ अपने मिशनरी प्रयासों में भी लगा रहा।

रोम में अपनी पहली कैद के दौरान पौलुस ने लिखा, जिसे ''कैद के पत्र,'' या ''जेल की पत्रियां'' कहा जा सकता है, जिनमें इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन शामिल हैं।[12] डोनल्ड गुथरी ने इस सम्भावना से कि पौलुस इफिसुस में कैद था और इस कैद के दौरान उसने पत्र लिखे कि लाभ-हानियों की समीक्षा करने के बाद तय किया कि प्रमाण अनिश्चित है। इसलिए उसने परम्परागत विचार को माना कि ''कारावास की पत्रियां'' पौलुस द्वारा पहली रोमी कैद के दौरान लिखी गई थीं।[13]

जब कुलुस्से की कलीसिया में गड़बड़ हुई तो स्पष्टतया इपफ्रास पौलुस की सलाह लेने के लिए रोम में गया कि इस गड़बड़ से कैसे निपटा जाए (देखें कुलुस्सियों 1:7; 4:12, 13)। इसके अलावा पौलुस भगौड़े गुलाम उनिसमुस से सम्पर्क करने आया था, उसने उसे मसीही बनाया और माना कि उसके लिए उसे कुलुस्से में अपने स्वामी के पास भेजना आवश्यक है।[14] दास के स्वामी फिलेमोन को पौलुस द्वारा पहले ही मसीही बना लिया गया था (फिलेमोन 19)। शायद इफिसुस में पौलुस की तीन साल की पहली मिशन यात्रा के दौरान।[15] उसे घर भेजकर पौलुस कुलुस्से में हुई गड़बड़ी से निपटना और भगौड़े गुलाम की रक्षा करना चाहता था। इसलिए उसने तुखिकुस और सम्भवतया उनिसिमुस (फिलेमोन 10-13) के हाथ पत्र भेजने का प्रबन्ध करते हुए कुलुस्सियों और इफिसियों की पुस्तकें लिखीं (कुलुस्सियों 4:7)। तुखिकुस और उनिसिमुस असिया को जा रहे होंगे, जिस कारण पौलुस ने इफिसुस के नाम पत्र भेजने के अवसर का लाभ उठाया (इफिसियों 6:21, 22)। इस पत्र ने परमेश्वर की मंशा की व्याख्या इतने विस्तार से कर

दी जिसका पहले उस नगर के भाइयों को ज्ञान नहीं था। कुलुस्सियों और फिलेमोन के साथ-साथ इसके लिखे जाने का समय पौलुस की रोम में पहली कैद के दौरान ईस्वी 60-61 के लगभग रहा।[16]

गंतव्य

इफिसुस नगर

पहली सदी के संसार में इफिसुस नगर की बड़ी प्रसिद्धि थी। पहले तो इसका *वाणिज्यिक महत्व* था, क्योंकि यह केस्ट नदी की तराई के सामने था और बड़ी ज़बर्दस्त बन्दरगाह था। इसने वाणिज्य के वे सारे लाभ लिए,जो नदियों और समुद्र से मिल सकते थे। इसके अलावा इफिसुस को तीन बड़े राजमार्ग जोड़ते थे, जिससे फ्रात, एशिया माइनर और मियेंडर नामक तराई से कारोबार होता था।

दूसरा, इफिसुस का *राजनैतिक महत्व* था, क्योंकि रोम ने इसे सीमाओं में रहते हुए अपना प्रबन्ध आप चलाने का अधिकार दिया हुआ था। नगर पर रोमी सिपाहियों को ठहराने का कोई दबाव नहीं था और लोग प्रबन्ध चलाने वाले अधिकारियों का चयन स्वयं करते थे। इसके साथ ही इफिसुस रोमी न्याय देने के केन्द्र का काम करता था; हाकिम साल के दौरान ठहराए हुए समयों में वहां अदालत लगाता था। इसके अलावा ओलम्पिक खेलों के स्तर की पेनियोनियन खेलें मई के महीने (मइयुस) में इफिसुस में होती थीं और लोनिया के सब लोग इस अवसर के लिए नगर में इकट्ठा होते थे।

तीसरा, इफिसुस का *धार्मिक महत्व* था। इसकी शान डायना या अर्तिमिस का मन्दिर था (देखें प्रेरितों 19:35), जो न जाने कब से वहां था। यह मन्दिर प्राचीन संसार के सात अजूबों में से एक था। यह 425 फुट लम्बा, 220 फुट चौड़ा और 60 फुट ऊंचा था। मन्दिर में संगमरमर के 127 खम्भों की कतार थी। जिनमें 36 खम्भों पर सोने, जवाहरात और बारीक काम की नक्काशी की गई थी। मन्दिर के भीतर बड़ी वेदी थी और वेदी के पीछे मखमल के पर्दे थे। पर्दों के आगे अरतिमस की मूर्ति थी। मूर्ति के आरम्भ का किसी को पता नहीं था, पर कइयों का मानना था कि यह आकाश से गिरी थी। मूर्ति बनाने में देवदार की लकड़ी, देवदार, आबनुस या पत्थर का इस्तेमाल हुआ हो सकता है। विलियम बार्कले ने यह विवरण दिया है:

> ... मूर्ति एक काली पालथी मारकर बैठी घृणाजनक आकृति थी। इसे कई छातियों से ढका गया था, जो संतान देने का प्रतीक था और एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में त्रिशूल था। यह एक अजीब, बदसूरत, बेढंगी आकृति थी; और इसके आधार पर अजीब-अजीब चिह्न थे, जिनका अर्थ किसी को मालूम नहीं था।[17]

डायना के मन्दिर की उपासना भावनात्मक उनमत्ता से भरी और रहस्यमयी थी। इसमें सबसे शर्मनाक और नीच गतिविधियां होती थीं, जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस मन्दिर में लोगों की कीमती चीज़ें सुरक्षित रहती थीं और इस कारण यह बैंक का काम करता था। यह खतरनाक अपराधियों के लिए आश्रय का स्थान भी था, जिस कारण इफिसुस दुष्टता और बुराई

के लिए बदनाम था। तौभी प्रेरित पौलुस ने इस नगर में किसी भी दूसरे नगर से जिसमें उसने प्रचार किया अधिक समय बिताया।[18]

इफिसुस की कलीसिया

प्रेरितों 13—20 के अनुसार पौलुस तीन मिशनरी यात्राओं पर गया, जिनमें से प्रत्येक का अन्त सीरिया के अन्ताकिया में हुआ। फ्रैंक जे. वुडविन[19] और डोनल्ड गुथरी[20] ने इन यात्राओं का समय ईस्वी 45 से 58 के बीच का बताया है। इफिसुस में पौलुस के काम का विवरण प्रेरितों 18—20 में मिलता है, जो कहता है कि वह नगर में अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के समय आया वहां वह कुछ समय के लिए रहा, परन्तु जाते समय उसने वापस आने का वचन दिया (प्रेरितों 18:19-21)।

अपनी तीसरी यात्रा पर, जो ईस्वी 50 के लगभग की बात है, वह लौटा भी। पौलुस को वहां कुछ चेले मिले, जिन्होंने बेशक अपुलोस का नाम लिया था। अकविला और प्रिसकिल्ला द्वारा अच्छी रीति से वचन सिखाने तक अपुलोस केवल यूहन्ना का बपतिस्मा देते हुए, इफिसुस में काम कर रहा था (प्रेरितों 18:24-26)।

मसीह की सेवकाई से पूर्व यूहन्ना प्रचार करते हुए और पापों की क्षमा के लिए लोगों को बपतिस्मा देते हुए आया था। यहूदा के साथी जंगल में यूहन्ना ने ''पापों की क्षमा के लिए मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार'' कर दिया था (मरकुस 1:4)। यह बपतिस्मा लोगों को आने वाले मसीहा के लिए तैयार करने के लिए था (देखें यूहन्ना 1:19-51)। परन्तु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान और प्रेरितों 2 में कलीसिया के आरम्भ के बाद से यूहन्ना का बपतिस्मा नहीं दिया जा सकता था। अपुलोस ने इफिसुस में केवल यूहन्ना के बपतिस्मे की शिक्षा दी थी, जिस कारण प्रेरितों 19 अध्याय में मसीही बनने वालों ने वह बपतिस्मा पाया था, जो अब लागू नहीं था।

मसीह के साथ उनके सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों से पूछा, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' (प्रेरितों 19:2) जब उन्होंने उत्तर दिया ''हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी'' (प्रेरितों 19:2) तो पौलुस को पता चला कि उनका बपतिस्मा ठीक ढंग से नहीं है। जिस बपतिस्मे की आज्ञा यीशु ने दी थी और जो पिन्तेकुस्त के दिन से दिया जाता है, ''यीशु मसीह के नाम में'' उसमें ''पापों की क्षमा'' और ''पवित्र आत्मा का दान'' (प्रेरितों 2:38) की प्रतिज्ञा है। इसलिए पौलुस ने उन्हें ''प्रभु यीशु के नाम का'' बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी (प्रेरितों 19:5)। यह उनका, जिन्होंने बपतिस्मा लिया था यह देखने का अच्छा उदाहरण है कि उन्हें बपतिस्मे के उद्देश्य की समझ थी और उन्हें सही कारण के लिए दूसरी बार डुबकी दी गई थी। इस प्रकार से इफिसुस की कलीसिया आरम्भ हुई थी।

यहूदियों और यूनानियों के साथ लगभग तीन साल तक इफिसुस में पौलुस ने अपना काम जारी रखा (प्रेरितों 19:8-10; 20:31) जिससे ''प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया'' (प्रेरितों 19:20)। अरितमिस देवी के बचाव में भड़के दंगे के बाद पौलुस इफिसुस छोड़कर मकिदुनिया में चला गया (प्रेरितों 20:1); लेकिन इन तीन सालों के दौरान एक मज़बूत कलीसिया की स्थापना हो चुकी थी। यरूशलेम जाते हुए पौलुस इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों से मिलेतुस में मिला और उन्हें भावुक विदाई संदेश दिया, जो प्रेरितों 20:17-38 में दर्ज है।

''इफिसुस में'' (1:1)

क्या पत्र इफिसुस में भेजा गया था? आरम्भिक वाक्य में सभी हस्तलिपियों में तीन को छोड़ इन शब्दों का अर्थ ''इफिसुस में'' ही है (1:1)। इसके अलावा सभी प्राचीच संस्करणों में अनुवादों में इस वाक्यांश को शामिल किया गया है। म्युरेटोरियम कैनन, इरेनियुस, टरटुलियन, सिकंद्रिया के क्लेमेंट और ओरिगन ने इस पत्र को ''इफिसियों के नाम पत्री'' बताया है।[21] के आरम्भिक लेखकों का मानना था कि यह पत्र इफिसियों के नाम लिखा गया है, चाहे मूल लेख में ''इफिसुस में'' शब्द हों या न।[22] यह पत्री के मूल प्राप्तकर्त्ताओं के रूप में इफिसियों को स्वीकार करने का मजबूत मामला लगता है, पर विचार करने की बातें और भी हैं।

क्या यह एशिया के इलाके में कई कलीसियाओं को भेजा गया एक परिपत्र है? तीन यूनानी हस्तलेख, जिनमें इफिसुस में यह शब्द नहीं है, उनके नाम हैं सिलेसिकुस, वेटिकेनुस और पी46.[23] तीनों में से पहले दो सबसे पुराने और बेहतरीन मौजूद हस्तलेख हैं और अन्तिम हस्तलिपि एक अच्छी लिखित क्रिती है, या सभी छोटे अक्षरों में लिखी गई हस्तलिपी है। कुछ व्याख्याकर्त्ता 1:15 को प्रमाण के रूप में उद्धृत करते हैं कि पौलुस को पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं के मन परिवर्तन की जानकारी केवल रिपोर्ट से मिली थी। यह अजीब लगता है। क्योंकि पौलुस ने इफिसुस में तीन से अधिक साल बिताए थे। परन्तु पौलुस इफिसुस से अपने जाने के बाद से उनके विश्वास और प्रेम में बढ़ने की बात कर रहा हो सकता है। इसके अलावा कुछ लोग 3:2 का इस्तेमाल इस प्रमाण के रूप में करते हैं कि इफिसुस के लोगों को पौलुस का पता केवल उसकी प्रतिष्ठा से लगा था। परन्तु हो सकता है कि उन्होंने पौलुस के काम को स्वयं उसी से सुना हो। इसके अलावा 3:2-4 की व्याख्या यह अर्थ देने के लिए की जाती है कि इफिसुस के लोगों को पौलुस के लेखों से यह पता लगाना था कि उसे परमेश्वर की ओर से प्रकाशन दिया गया था या नहीं। यह अपने आप में पत्र के लिए कहा जा सकता है।

और प्रमाण कि इफिसियों की पत्री एक परिपत्र हो सकता है, तथ्य है कि पौलुस ने अपनी आदत के अनुसार किसी कलीसिया को, जिसे वह अच्छी तरह जानता था, निजी सलाम नहीं भेजा। इसके अलावा 6:23, 24 का आशीष वचन अन्य पुरुष के सामान्य ढंग में कहा गया है न कि मध्यम पुरुष की उस विशेष शैली में, जिसका इस्तेमाल पौलुस ने अपने अन्य पत्रों में किया।

प्रमाण पर विचार करने के बाद हम ''इफिसुस में'' शब्दों के होने को इतने सारे आरम्भिक दस्तावेजों में होने और आरम्भिक मसीही लोगों के विचार को कि यह पत्र इफिसुस की कलीसिया के नाम लिखा गया था, कैसे बताएं। हेनरी क्लेरंस थियसन,[24] डोनल्ड गुथरी[25] और अन्यों ने निम्न सम्भावनाओं की पेशकश की है।

(1) ''पौलुस ने यह पत्री एशिया के इलाके लिए परिपत्र के रूप में 'जो में हैं' (1:1) के बाद खाली स्थान छोड़ते हुए जिसे उस कलीसिया द्वारा भरा जाना था जिसे यह दी जानी थी या मूल की बनाई गई प्रति में नाम जोड़ने के लिए।'' इस थ्योरी के अनुसार, इफिसुस की कलीसिया के पास हस्तलिपी से बनाई गई लगभग सभी प्रतियां थीं। शायद यह पत्र इफिसियों के नाम पत्र के रूप में इसलिए जाना जाने लगा, क्योंकि इसे इफिसुस से वितरित किया गया था। सिनेटिकुस और वैटिकेनुस (जो मूल लेख होना दर्शाते हैं) में से ''इफिसुस में'' शब्द नहीं है। इस कारण उन्हें बाद के संस्करणों में जोड़ा गया हो सकता है।

(2) ''पत्र लौदीकिया को भेजा गया था।'' यह थ्योरी कुलुस्सियों 4:16 में लौदिया के नाम पत्र के पौलुस के हवाले पर आधारित है। ऐसे किसी पत्र के बारे में हम इससे बढ़कर नहीं जानते। मारसियन ने इफिसियों के ''लौदीकिया के नाम पत्री'' के रूप में होने की बात कही है।[26] परन्तु ''इफिसुस'' के स्थान पर ''लौदीकिया'' के होने का हस्तलिपि का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

(3) ''पत्र किसी भी जगह की कलीसिया के लिए था।'' एक सामान्य अर्थ में नये नियम के सभी पत्रों के लिए यह कहा जा सकता है, क्योंकि वे आज की कलीसिया के लिए भी लिखे गए हैं।

मार्सियन का मानना है कि यह पत्र लौदीकिया के लिए था और सिनेटिकुस और वेटिकेनुस की हस्तलिपियों में ''इफिसुस में'' का न होना अन्य हस्तलिपियों और प्राचीन संस्करणों में शामिल ''इफिसुस में'' होने के प्रमाण को नकारता है। आरम्भिक लेखकों ने दिखाया कि इस पत्र को इफिसुस की कलीसिया के नाम पत्र के रूप में जाना जाता है। हम निष्कर्ष निकालते हैं कि यह पत्र इफिसुस को भेजा गया था और इसका संदेश हर जगह की कलीसिया के लिए और हर समय के लोगों को देने के इरादे से था।

उद्देश्य

इफिसियों के नाम पत्र लिखने का पौलुस का उद्देश्य मसीह और कलीसिया में परमेश्वर की सनातन मंशा को ठहराना था। इस वचन में मुख्य आयतों में 1:9, 10 हैं। पौलुस ने घोषणा की कि अपनी मंशा के अनुसार परमेश्वर ने अपनी इच्छा का भेद प्रकट कर दिया है, जो कि मसीह के द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी को मिलाना है। पौलुस ने उन आत्मिक आशिषों की ओर ध्यान दिलाया जो मसीह में हमें मिली हैं (1:3-14) और उनके लिए इन आशिषों की बड़ी समझ के लिए प्रार्थना की (1:15-23)। इसके अलावा उसने मसीह के द्वारा नये कामों के कारण उस नये सम्बन्ध की जो यहूदियों और अन्यजातियों का एक-दूसरे के साथ और मसीह में परमेश्वर के साथ था प्रशंसा की (2:1-22)। पौलुस ने यहूदियों और अन्यजातियों को मसीह की देह में लाने के प्रकाशन और सुसमाचार के प्रचार की तारीफ़ की (3:1-9)। उसने परमेश्वर के अपनी योजना बताने के माध्यम के रूप में कलीसिया की बात की (3:10-13) और प्रार्थना की कि कलीसिया अपने मिशन को पूरा कर सके (3:14-21)।

पत्र के दूसरे भाग अर्थात जो कुछ पहले भाग में उसने कहा था उसकी व्यावहारिक प्रासंगिकता में पौलुस ने अपने पाठकों से शिक्षा में एक और मजबूत बने रहकर मसीह और कलीसिया में परमेश्वर की मंशा को पूरा करने का आग्रह किया (4:1-6)। उसने दिखाया कि किस प्रकार से मसीह में कलीसिया को अपने काम के लिए तैयार किया (4:7-16) और जीवन के पुराने ढंग को छोड़ने और नये जीवन में चलने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया (4:17-5:21)। उसने उन नियमों को जो उसने पत्नियों और पतियों, माता-पिता और बच्चों और सेवकों और स्वामियों के लिए बनाए थे, लागू किया (5:22-6:9)। फिर उसने परमेश्वर के हथियार बांधने और मसीह की सामर्थ में उसकी शक्ति में शैतान का सामना करने की आवश्यकता को दिखाया (6:10-20)। अन्त में उसने तुखिकुस के काम का ब्यौरा दिया (6:21, 22) और अपना आशीष वचन दिया (6:23, 24)।

इसलिए पौलुस ने लिखने का अपना इरादा बताया: मसीह और कलीसिया के द्वारा इस संसार में परमेश्वर की मंशा की घोषणा करना और इफिसुस के मसीही लोगों को अपने जीवनों में परमेश्वर की मंशा को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करना।

विषय

इफिसियों के नाम पत्र में छात्रों को वचन के अध्ययन आरम्भ करने से पहले प्रेरित द्वारा पत्र में दिए विभिन्न विषयों पर ध्यान देना लाभदायक होगा:

''*स्वर्गीय स्थान।*''दिया गया शब्द ''स्वर्गीय स्थानों'' इफिसियों की पुस्तक में पांच बार मिलता है (1:3, 20; 2:6; 3:10; 6:12)। यह एक यूनानी शब्द (*epouraniois*) का अनुवाद है, जो मूलतया ''heavenlies'' है।[27] ''हैवनलीज़'' वह स्थान है जहां मत्ती में सब आशिषें पाई जाती हैं (1:3), जहां मसीह को परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किया गया है और कलीसिया का सिर बनाया गया है (1:20, 21), जहां जो मसीह में हैं, उन्हें मसीह के साथ बिठाने के लिए जिलाया गया है (2:6), जहां कलीसिया को परमेश्वर की मंशा को बताना है (3:10), और जहां कलीसिया अपने शत्रुओं के साथ लड़ती है (6:12)। इसलिए कलीसिया मसीह के पुनरुत्थान और द्वितीय आगमन के बीच में अर्थात जो हो चुका है और जो अभी नहीं हुआ है, उसके रूप में है। कलीसिया संसार में है और संसार के द्वारा प्रभावित होती है, पर यह ''हैवनलीज़'' के आत्मिक क्षेत्र में सक्रिय है। कलीसिया चाहे संसार को सुसमाचार बताती और संसार को बदलने की ताक में है और यह संसार में भी बदलती है। यह संसार की नहीं है, परन्तु संसार से अधिक देर तक रहेगी।

''*मसीह।*''मसीह वह दायरा है, जिसमें मसीही लोग रहते हैं। ''मसीह में'' या इसके समान वाक्यांश इफिसियों में लगभग तेईस बार मिलता है। पौलुस ने दिखाया कि मसीह में विश्वासी लोग रहते हैं और हर प्रकार की आत्मिक आशिषों से आशीषित हैं। इन आशिषों में चुने जाना, स्वीकारे जाना, छुड़ाए जाना, क्षमा पाना और परमेश्वर के साथ एक होना है। मसीह में परमेश्वर के वारिस, पवित्र आत्मा के मोहर लगे हुए बना देता है। जो मसीह में हैं वे परमेश्वर के निकट हैं, और स्वर्गीय स्थानों में मसीह के साथ इकट्ठे बैठे हैं, परमेश्वर की नई सृष्टि हैं, दूसरे मसीही लोगों के साथ मिलाए गए हैं, परमेश्वर का भवन हैं, परमेश्वर के सामने साहसी हैं और परमेश्वर द्वारा सामर्थ पाए हुए हैं। इसके अलावा मसीह को कलीसिया के सिर और देह के उद्धारकर्त्ता के रूप में दिखाया गया है। वह परमेश्वर के भवन अर्थात कलीसिया के कोने का पत्थर है और परमेश्वर की मंशा का आकर्षण। वह क्रूस पर चढ़ाया गया, जी उठा और महिमा पाया हुआ प्रभु है, जो कलीसिया का अपना काम करने के लिए तैयार करता है। वह दुल्हन अर्थात कलीसिया का पति है और जिसके द्वारा हम परमेश्वर को महिमा देते हैं। पौलुस का पत्र यह दिखाते हुए बंद होता है कि मसीह हमारे प्रेम का सही पात्र है।

''*कलीसिया।*''इफिसियों की पुस्तक कलीसिया को ''उसकी देह'' के रूप में दिखाती है जिसमें मसीह सिर है और ''उसकी परिपूर्णता'' है (1:22, 23)। कलीसिया पर परमेश्वर का परिवार अर्थात ''परमेश्वर का घराना'' (2:19), पवित्र आत्मा का ''निवास स्थान'' (2:20-22) और मसीह की दुल्हन है (5:23-33)। (3:10, 21 भी देखें।) इन शब्दों के अर्थ बहुत दूरगामी

हैं। इस अध्ययन में आगे उन पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

''उद्धार।'' पाप से मनुष्य के उद्धार को मसीह के लहू के द्वारा छुटकारे और पापों की क्षमा के रूप में दिखाया गया है (1:7)। इसके अलावा उद्धार परमेश्वर की दया, अनुग्रह और प्रेम के द्वारा सम्भव बनाया गया बचाव है (2:1-7)। इसे किसी व्यक्ति के विश्वास के द्वारा परमेश्वर के दान के रूप में स्वीकारा जाता है (2:8-10)। उद्धार मसीह की मृत्यु के द्वारा प्राप्त किया जाता है जो मनुष्य और मनुष्य के बीच और मनुष्य और परमेश्वर के बीच मेल सम्भव बनाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि उद्धार अलग हुए पक्षों के बीच सुलह है जिससे ''एक नया मनुष्य'' (2:15) मसीह का शरीर बनता है। यह उद्धार एक भेद है जो कलीसिया के द्वारा जिसे परमेश्वर की ओर से अपने कार्य को पूरा करने की सामर्थ दी गई है, अब प्रकट किया जाता और इसका प्रचार किया जाता है (3:1-21)।

''चलना।'' पौलुस ने दिखाया कि एक-दूसरे के साथ और परमेश्वर के साथ मिलाए गए लोगों की देह अर्थात कलीसिया के लिए एकता में चलना आवश्यक है (4:1-16)। इसके लोग अविश्वासियों की तरह नहीं (4:17-32) बल्कि प्रेम में (5:1-6) ''ज्योति की संतान'' की तरह (5:7-14) और समझदारी से चलें (5:15—6:20)। अध्याय 4 से 6 में बताया गया, मसीही चलन अध्याय 1 से 3 में कलीसिया के बारे में बताई गई पौलुस की व्यावहारिक प्रासंगिकता से मेल खाता है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि शैतान की चालाकियों से अंधकार के संसार में परमेश्वर की ज्योति लाकर कलीसिया का व्यवहार कैसा हो।

रूपरेखा

I. सलाम: विश्वासयोग्य पवित्र लोगों के नाम पत्र (1:1, 2)

II. तेजस्वी कलीसिया का उद्देश्य (1:3—3:21)
   - क. हर प्रकार की आत्मिक आशिषें और कलीसिया का उद्देश्य (1:3-14)
   - ख. कलीसिया के उद्देश्य की प्राप्तकर्त्ताओं की गहरी समझ के लिए पौलुस की प्रार्थना (1:15-23)
   - ग. कलीसिया के उद्देश्य से बाहर रहने वालों का चित्रण (2:1-3)
   - घ. उद्धार की परमेश्वर की सनातन मंशा (2:4-10)
   - ङ. मसीह के लहू के द्वारा लाए गए (2:11-13)
   - च. उसकी देह में सम्भव किया गया मेल (2:14-22)
   - छ. अन्यजातियों में पौलुस की निजी सेवकाई (3:1-7)
   - ज. परमेश्वर की समझ दिखाई गई (3:8-13)
   - झ. शक्ति, समझ और भरपूरी के लिए प्रार्थना (3:14-21)

III. तेजस्वी कलीसिया का व्यवहार (4:1—6:20)
   - क. ''एकता बनाए रखकर अपने बुलाए जाने के योग्य चाल चलो'' (4:1-3)
   - ख. सात गुणा एकता रखना (4:4-6)

ग. कलीसिया के लिए मसीह के दानों को समझना (4:7-16)
घ. मन की आत्मा में नये होना (4:17-32)
ङ. मसीह के नमूने का अनुसरण करते हुए प्रेम में चलना (5:1-6)
च. ''ज्योति की संतान की तरह चलो'' (5:7-14)
छ. ''समझ में चलो'' (5:15—6:20)

IV. आशीष वचन: शांति और सांत्वना की आशीष (6:21-24)

प्रासंगिकता

परमेश्वर के भेद

संसार की नींव रखने से पहले परमेश्वर के मन में मनुष्य की सृष्टि का विचार था। अपनी असीम बुद्धि में उसे पता था कि मनुष्य विद्रोह करेगा और अदन की वाटिका में अपने उचित स्थान को खो देगा। इसलिए उसने मनुष्य को उसके विद्रोह के परिणामों से छुड़ाने के लिए एक योजना भी बनाई।

मनुष्य के पाप में गिरने का ज्ञान और छुटकारे की बाद के परमेश्वर की योजना स्वर्गीय सेनाओं से गुप्त रखी गई। वे परमेश्वर की योजना के सामने आने पर आश्चर्य से केवल देख सकते थे।

समय में परमेश्वर ने इस्राएल जाति के साथ एक वाचा बांधी, परन्तु परमेश्वर के कार्यों का वास्तविक अर्थ उनकी आंखों से छुपा हुआ था। मसीह के समय तक भी उस समय के सबसे समझदार धार्मिक अगुओं को भी समझ नहीं थी कि परमेश्वर इस्राएल के द्वारा क्या पाना चाह रहा था।

एक दिन यीशु के चेलों ने उससे पूछा, ''तू लोगों से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?'' तो यीशु ने उत्तर दिया, ''तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं'' (मत्ती 13:10, 11)। ''भेदों'' के लिए यहां यूनानी शब्द का इस्तेमाल (*mustērion*) से किया गया है जिसका अर्थ कोई ऐसी चीज़ है जो किसी समय गुप्त थी पर अब प्रकट कर दी गई है। इसका अर्थ यह हुआ कि ''भेद'' कोई भी बात है जो पहले गुप्त थी पर अब सब को पता है। हम पढ़ते हैं,

> अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात यीशु मसीह के विषय के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा। परन्तु अब प्रकट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यवाणियों की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है, कि वे विश्वास से आज्ञा मानने वाले हो जाएं। उसी अद्वैत बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन (रोमियों 16:25-27)।

ये भेद अर्थात ये ''गुप्त रहस्य'' क्या हैं जो किसी समय छिपे हुए थे पर अब प्रकट कर दिए गए हैं?

(1) *इस्राएल के अविश्वास का भेद।*

इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम *इस भेद* से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक *इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा* (रोमियों 11:25)।

यहूदियों ने कभी कल्पना नहीं की थी कि वे मसीहा को ठुकरा देंगे। वे उसके आने की राह देखते थे। हर यहूदी मां यही उम्मीद रखती थी कि उसका बेटा ही मसीह होगा। परमेश्वर को मालूम था कि जब वह अन्त में मसीहा को भेजेगा तो यहूदी लोग उसे ठुकरा देंगे। यह परमेश्वर के गुप्त रहस्यों में से एक था।

(2) *देहधारी हुए परमेश्वर का भेद।*

> ताकि उनके मनों में शान्ति हो ओर वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और *परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात मसीह* को पहचान लें (कुलुस्सियों 2:2; देखें इफिसियों 1:9)।

यहूदी लोग आस-पास के देशों के दबाव से लोगों को छुड़ाने के लिए एक महान सैनिक नेता, राजनैतिक उद्धारकर्त्ता की राह देखते थे। उन्होंने कभी सपना भी नहीं देखा था कि उनका मसीहा मानवीय देह में परमेश्वर होगा! संसार की नींव रखने से पहले परमेश्वर ने इस सब की योजना बना ली। पर यीशु के पुनरुत्थान तक यह सब गुप्त रहा था। अब इसे खुलेआम बता दिया गया है कि मसीहा कोई और नहीं बल्कि मानवीय देह में परमेश्वर है।

(3) *मसीह के निवास स्थान का भेद।*

> अर्थात उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रकट हुआ है। जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि *अन्यजातियों में उस भेद* की महिमा का मूल्य क्या है? *और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है* (कुलुस्सियों 1:26, 27)।

यहूदी लोग यरूशलेम में दाऊद के सांसारिक सिंहासन पर बैठने के लिए भी मसीहा की राह देखते थे, परन्तु परमेश्वर ने अपने मसीह को हमेशा अपने लोगों के मनों के सिंहासनों पर बिठाने की इच्छा की, जैसे वह उनमें रहता था। किसी नबी ने कभी इस सच्चाई की कल्पना नहीं की। यह परमेश्वर के गुप्त रहस्यों में से एक और है जो कभी परमेश्वर के मन में छुपा हुआ था परन्तु अब प्रकट कर दिया गया है।

(4) *अमरता का भेद।*

> देखो, मैं तुम से *भेद* की बात कहता हूं: कि *हम सब* तो नहीं सोएंगे, परन्तु *सब बदल जाएंगे।* और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे। *क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले* (1 कुरिन्थियों 15:51-53)।

यूनानियों का मानना था कि देह बुराई है और मृत्यु मनुष्य की आत्मा को देह की कैद से छुड़ा देती है। पौलुस ने यह तर्क देते हुए कि परमेश्वर हर व्यक्ति को एक दिन अविनाशी अर्थात अमर देह देगा, इस अवधारणा में सुधार किया। यीशु मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर ने मनुष्य के अविनाशी होने के रहस्य को खोल दिया।

(5) *मसीह की देह का भेद।*

> क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इस लिए कि हम उस की देह के अंग हैं। ... *यह भेद तो बड़ा है;* पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं (इफिसियों 5:29-32)।

जो कुछ हमें पता चलता है उसके अनुसार रहकर हम अपने समाजों को परमेश्वर के महानतम रहस्यों में से एक अर्थात यह भेद बताते हैं कि हम मसीह की देह बनते हैं और संसार में उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए मिलकर काम करते हैं।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]*फोर्ट वर्थ क्रिश्चियन कॉलेज लेक्चर्स* (1962): 152 में जॉन बेनिस्टर, ''मैसेजस ऑफ बुक्स ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट।'' [2]रोमियों से फिलेमोन में अभिवादनों की तुलना करें। पौलुस किसी पत्र के मुख्य भाग में कई बार अपना हवाला दे देता था: देखें 2 कुरिन्थियों 10:1; गलातियों 5:2; कुलुस्सियों 1:23; 1 थिस्सलुनीकियों 2:18; फिलेमोन 9. इसके अलावा उन पत्रों की भी तुलना करें, जिनमें अन्त में पौलुस का नाम आता है: 1 कुरिन्थियों 16:21; कुलुस्सियों 4:18; 2 थिस्सलुनीकियों 3:17; फिलेमोन 19. [3]डोनल्ड गुथरी, *न्यू टैस्टामेंट इंट्रोडक्शन* (पृष्ठ नहीं: टिंडेल प्रैस, 1970; रिप्रिंट, डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 479-80. [4]हेनरी क्लेरेंस थियसन, *इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1943), 240. [5]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संपा. जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 2:959 में चार्ल्स स्मिथ लुईस, ''एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [6]वही, 956. [7]गुथरी, 480; हैरल्ड डब्ल्यू. होहनेर, *इफिसियंस: एन एक्सेजेटिकल कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर एकेडमिक, 2002), 2-6; ऑर पीटर टी. ओ'ब्रायन, *द लैटर टू द इफिसियंस,* द पिल्लर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 4. [8]और जानकारी के लिए, उन विद्वानों की तुलना करते हुए 1519 से 2001 तक पौलुस के लेखक होने के पक्ष में और विरोध में हैं चार्ट देखें (होहनर, 9-18)। [9]थियसन, 240-41. [10]पौलुस ने यह संकेत देते हुए कि उसने इन दो पत्रों के शेष भाग बोलकर लिखवाए हो सकते हैं, पौलुस ने कहा कि उसने 1 कुरिन्थियों 16:21 और कुलुस्सियों 4:18 के सलाम अपने हाथ से ''लिखे।''

[11]छद्म ग्रंथ जिसका अर्थ ''नकली लेख'' है, उन दस्तावेज़ों की बात है जो प्रसिद्ध, काल्पनिक नामों से लिखे गए। [12]जेल की पत्रियों के लिखे जाने के लिए अन्य सम्भावित कारावासों का सुझाव दिया गया है। दो अन्य कारावास इफिसुस में पौलुस के रहते (ई. 55; प्रेरितों 20:17, 31) या कैसरिया में (ई. 58; प्रेरितों 24:27)। पौलुस के रहते लिखे गए हो सकते हैं। रोमी कारावास के पक्ष में चर्चाओं के और अध्ययन के लिए देखें पीटर टी. ओ'ब्रायन, *कोलोसियंस, फिलेमोन,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक. 44 (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), xlix-liv; और ओवन डी. ऑल्ब्रट एंड ब्रूस मैक्लॉर्टी, *कोलोसियंस एंड फिलेमोन*, ट्रुथ फ़ार टुडे कमैंट्री (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 2005), 8-9, 494. [13]गुथरी, 472-78. [14]कई व्याख्याकारों का मानना है कि फिलेमोन कुलुस्से में

रहता था, परन्तु एक तर्क उसका घर लौदीकिया में होने का दिया गया है। ऐसा होने पर फिलेमोन के नाम पत्र लौदीकिया के नाम पत्र हो सकता है जिसका उल्लेख पौलुस ने कुलुस्सियों 4:16 में किया। (थियसन 236–37.) [15]वही, 235. [16]वही, 233. [17]विलियम बार्कले, *लैटर्स टू द सेवन चर्चिस* (नैशविल्ले, अबिंग्डन प्रैस, 1957), 15. [18]इफिसुस में अरतिमिस सम्प्रदाय के और अध्ययन के लिए देखें रिचर्ड ऑस्टन, ''*द इफिसियंन अरतिमिस एज़ एन अपोनंट ऑफ़ अरली क्रिश्चियनिटी*, *Jahrbuch Für Antike und Christentum* 19 (1976): 24–44; और आकृति के साम्प्रदायिक महत्व के सम्बन्ध में, देखें ओस्टर, 28. [19]फ्रैंक जे. गुडविन, *ए हारमनी ऑफ द लाइफ ऑफ़ सेंट पॉल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1951; रिप्रिंट, ऐन अरबोर, मिशिगन: कुशिंग–मैलॉय, 1973), 35, 87. [20]गुथरी, 65–66.

[21]थियसन, 242. [22]गुथरी, 509. [23]एंड्रयू टी. लिन्कन, *इफिसियंस*, वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक. 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 1. [24]थियसन, 243–44. [25]गुथरी, 510–12. [26]थियसन, 244; गुथरी, 480. [27]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कौर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 365; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3रा संस्क., संशो एवं. संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकॉगो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 388 भी देखें।